REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 8 | MAY - 2022

आदिवासी कविता की पड़ताल

डॉ अरविंद कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रेम किशन खन्ना राजकीय महाविद्यालय, जलालाबाद, शाहजहांपुर (उत्तर प्रदेश).

प्रस्तावना:

समय के साथ–साथ साहित्य लेखन में भी बदलाव आता रहा है। भारत देश विविधताओं का देश है जहाँ विविध धर्म एवं भौगोलिक सीमाएं बदलते ही रीति–रिवाज, परंपराएं बदलने लगती हैं, यह ऐसा ही देश है। शिक्षा का प्रचार–प्रसार जैसे–जैसे बढ़ता गया, वैसे–वैसे साहित्य में भी परिवर्तन की अनुगूँज सुनाई देने लगती है। साहित्य में सामाजिक परिवर्तन, समसामयिक मुद्दों, बहसों, आंदोलन की खनक संवेदनशील कवि अपनी कविता में प्रस्तुत करते हैं। यह समय साहित्य में अस्मितावादी लेखन का चल रहा है। इस अस्मितावादी साहित्य ने साहित्य को समझने की नई दृस्टि दी है। अस्मिता साहित्य के अंतर्गत– दलित साहित्य, स्त्री–साहित्य, दलित मुस्लिम लेखन, दलित इसाई लेखन एवं आदिवासी साहित्य की पड़ताल की जा चुकी है। साहित्य में हाशिये पर रह रहे लोगों के जीवन को केंद्रित करके साहित्य की काव्यशाखा के अंतर्गत अभाव दिखाई देता है। इस अभाव की पूर्ति ही आदिवासी समाज के होनहार लेखक एवं कवि कर रहे हैं। इस समय चर्चित कवियों में निर्मला पुतुल, वंदना टेटे, राजू थोकल, अनुज लुगुन, महुआ मांझी, जन्सिता केरकट्टा, रमणिका गुप्ता, सिद्धेश्वर सरदार, रामदयाल मुडा, भुजंग मेश्राम, वाहरु सोनवणे, ग्रेस कुजूर, महादेव टोप्पो, शिवलाल किस्सू, सरिता बड़ाइक, आदित्य कुमार मान्डी, रवि कुमार गोंड़ इत्यादि हैं। ये समस्त कवि अपनी उर्वर लेखनी से आदिवासी साहित्य की श्रीवृद्धि कर रहे हैं।

अस्मितावादी साहित्य में साहित्य में नई उपस्थिति दर्ज की है। आदिवासी कवियों ने अपनी कविताओं में दुख–दर्द, पीड़ा, विस्थापन की समस्या, जल, जंगल एवं ज़मीन को लेकर संघर्स, लोकरीति, परंपराओं, रूढ़ियों, लोकविश्वास, परंपराजनित लोकगीत, उनके खान–पान, लोकसंस्कृति, अपनी पहचान को दिलाने के लिए संघर्स, वह आक्रोश की अभिव्यक्ति कर रहे हैं।

रमणिका गुप्ता ने आदिवासी समाज की अभिव्यक्ति को अच्छी तरह समझती हैं। वह आदिवासी लोगों के साथ कदम ताल मिलाती हैं। उनकी कविता 'कलुआ मांझी' में कलुआ को नायक और आत्माभिप्यक्ति करते हुए स्वयं की पहचान बताता है। रमणिका गुप्ता का नायक कलुआ कहता है :

''मैं क्रांति चाहता हूँ तो
तुम हिंसा कहते हो
मैं इन्कलाब माँगता हूँ तो
तुम एडवेंचरिस्ट कहते हो।'' (आदिवासी कविताएं, रमणिका गुप्ता, पृ. 13)

दरअसल आदिवासी कविता का तेवर विलकुल दलित कविता का तेवर जैसा दिखाई पड़ता है। क्योंकि सदियों से वंचित रखने का प्रयास सदैव किया जाता रहा है और किया गया है। वह खुलकर विरोध करते हैं। 'मैं कलुआ मांझी हूँ' कविता का 'कलुआ मांझी' अन्याय के विरुद्ध है। वह कहता है :

''मैं अन्याय का विरोध करता हूँ
उसका सिर कुचलता हूँ
तो तुम मुझे नक्सलवादी कहते हो
मैं समता की बात करता हूँ
सपनों की याद रखता हूँ
तो तुम मुझे लोहियावादी कहते हो। (आदिवासी कविताएं, रमणिका गुप्ता, पृ. 13)

वह अन्याय के खिलाफ वह नक्सलवादी नहीं, न ही लोहियावादी हैं वह एक मनुस्य हैं और समान अधिकार, समान न्याय की मांग करते हैं। वह जो आधे पेट भोजन करते हैं जो अपने पेट की भूख मिटाने के लिए जीवन से संघर्स कर रहे हैं। कवयित्री का नायक कहता है :

''तब मैं
कुछ और कहलाऊँगा
अभी तो केवल रोटी माँगता हूँ।
पेट भर !'' (आदिवासी कविताएं, रमणिका गुप्ता, पृ. 14)

आदिवासी लोगों इसलिए आये दिन आंदोलन करते देखे जाते रहे हैं जब तक उनकी मूल सुविधाएं रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य को ध्यान नहीं दिया जाएगा। तब ये आंदोलन आये दिन होते रहेंगे। आदिवासी क्रांति के अग्रदूत रहे बिरसा मुंडा को कविता समर्पित करते हुए लिखती हैं :

''अवतार नहीं चकमक थे बिरस
और थे तीर की रफ़्तार
जिसने जल, जंगल, ज़मीन पर
ठोका था दावा
वह क्रांति के बिरसा।'' (आदिवासी कविताएं, रमणिका गुप्ता, पृ. 82)

रमणिका गुप्ता की अन्य कविताओं में 'वे बोलते नहीं थे', 'हमहूँ बिन पाखी उड़े के चाही', 'करिया पहाड़', 'वह कोयला चोर', 'मुझे तुम्हारे कालेपन पर प्यार आता है', 'तू केवल मिट्टी ढोता है', 'बेड़ियों से प्यार करता हूँ', 'लकड़ियों में खोजती आकार/धुआँ', 'नागा', 'मिजो–मन', 'सभ्यता की जूठी चोंच' एवं 'आदिवासी ने तीर क्यों चलाया' इत्यादि । 'आदिवासी कविताएं' शीर्सक से सन 2016 में कविताएं प्रकाशित हुई। वह 'आदिवासी ने तीर क्यों चलाया' कविता में अन्याय के खिलाफ कैसे आदिवासी तीर चलाता है उसका स्पस्ट बयान करती हैं:

''जब बोल नहीं पाता आदिवासी
जब शब्द हो जाते हैं गूँगे
जुबान हो जाती है जड़
ते उसका गुस्सा जुबान पे नहीं
हाथों में उतर आता है
और हाथ थाम लेते हैं तीर
तीर की नोंक उसके बोले शब्दों को तराश कर देती आकार
और फिर कमान से छूटते सरसराते तीर शब्दों से
अन्याय के खिलाफ़ दर्ज़ कराते हैं प्रतिवाद !'' (आदिवासी कविताएं, रमणिका गुप्ता, पृ. 92)

सिद्धेश्वर सरदार विलुप्त होते 'भूमिज' आदिवासी समूह के कवि हैं। वह अपनी वाणी, वेशभूसा, बोली–बानी, अपने जल, जंगल, जमीन, रीति–रिवाज को किसी प्रकार से खोना नहीं चाहते हैं। वह अपनी कविता 'खोना नहीं' कहते हैं :

''खोना नहीं खोना नहीं
माँ की मातृभासा बाबूजी की मातृभूमि
खोना नहीं छोड़ना नहीं
माँ की मातृभासा में बातचीत करना
सभी बच्चों के मन की आशा।''
(युद्धरत आम आदमी, सं. रमणिका गुप्ता, वर्स 2, अंक–12, सितंबर 2014, पृ. 46)

आदिवासी युवालोचना के हस्ताक्षर रविकुमार गोंड़ की लंबी कविता 'आदिवासी स्वर' ने आदिवासी साहित्य में अपना विशेस स्थान बना लिया है। वह आदिवासियों की तरफ से सत्ता–शासन से प्रश्न करते हैं :

''मैं पूछता हूँ खुले स्वर में
आखिर हमें, इतिहास से
क्यों नदारद किया गया ?
हमारे अस्तित्व के साथ
क्यों छल किया गया ?
अरे ! स्वार्थी मानव,
तूने अपने नाम के लिए
किये गये हमारे सब कार्यों को
नज़र अंदाज कर,
विलुप्त कर दिया।''

आदिवासी कविता दलित कविता की तरह वेदना की कविता है। कवि रविकुमार गोंड़ की कविता 'आदिवासी अभिव्यक्ति' में वह लिखते हैं :

''कुछ ऐसे गद्दार हैं,
जो लूट रहे है हमको
ळाक करके बेखौफ।
धधक रही है आग सीने में,
अब बहुत हो चुका ऐसी जिंदगी जीने में।''

आदिवासी युवा भारतीय समाज की मुख्यधारा में सामिल होकर देश, समाज के लिए कुछ करना चाहता है। वह अपने समाज में परिवर्तन का आंकाक्षी है।

रविकुमार गोंड़ का कविता संग्रह 'आदिवासी स्वर' की कविताओं में हैं,'' जब आदिवासियों का कारवाँ चलता है', 'अरे, उठा हो! आदिवासी वीर जवनवा', 'वुक्ष की आत्माभिव्यक्ति', 'आदिवासी स्त्री की कल्पना', 'आदिवासी संवेदना', ' आदिवासी प्रश्न', ' आदिवासी स्वर', 'आदिवासी अर्ज', 'आदिवासी अस्मिता', 'आदिवासी शांति–संदेश', 'आदिवासी आक्रोश','हाशिये पर जिंदगी', 'आदिवासी प्रार्थना', 'उलगुलान' इत्यादि कविताएं संकलित हैं। इस संग्रह में कुल 72 कविताएं संकलित हैं। कवि रविकुमार गोंड़ 'मैं संवेदना का कवि हूँ' कविता में कहते हैं :

''मैं संवेदना उन लोगों तक पहुँचाता हूँ
जिन्हें बेदखल कर दिया गया
जल, जंगल, ज़मीन और संवैधानिक अधिकार से।''

'आदिवासी प्रश्न' कविता में कवि कहता है :

''मैं आदिवासी हूँ
जंगल का वासी हूँ
अभी भी संजोएं रखा है मैंने,
प्रेम, एकता, भाई–चारगी।
अस्सी प्रतिशत प्राकृतिकक संसाधन,
हमारे क्षेत्र में मिलते हैं
फिर भी हम आज हासिये पर हैं।''

निर्मला पुतुल आदिवासी कवयित्रियों में अपना अद्वितीय स्थान रखती हैं उनका कविता संग्रह है–'नगाड़े की तरह बजते शब्द'। निर्मला पुतुल की कविता 'तुम्हारे अहसान लेने पहले सोचना पड़ेगा' कहती हैं :

''अगर हमारे विकास का मतलब
हमारी बस्तियों को उजाड़कर कल कारखाने बनाना है
तलाबों को ढांपकर राजमार्ग
जंगलों का सफाया कर ऑफिसर्स कॉलोनियाँ बसाती हैं
और पुर्नवास के नाम पर हमें

हमारे ही शहर की सीमा से
बाहर हाशिये पर धकेलना है
तो तुम्हारे तथाकथित विकास की मुख्यधारा में
शामिल होने के लिए
सौ बार सोचना पड़ेगा हमें।''

निर्मल पुतुल आदिवासी स्त्रियों की पीड़ा, दर्द, अस्मिता को अपनी कविताओं में उकेरती हैं। और स्त्री के साथ खड़ी होती दिखाई पड़ती हैं। निर्मल पुतुल की स्त्री अपने अधिकार के प्रति सजग है। तभी तो वह कहती हैं :

''इस बार मैं चुप नहीं रहूँगी
छीन कर तोड़ दूँगी तुम्हारी बाँसुरी
कि देखो इस बार
वे मुझे उठाने आ रहे हैं''

आदिवासी कविता का जाना पहचाना नाम महादेव टोप्पो है। उनका कविता संग्रह 'जंगल पहाड़ के पाठ' महत्त्वपूर्ण है। आदिवासियों के नाम लिये जा रहे फंड, उनकी संस्कृति को संरक्षण के नाम पर छल आदि को 'तुम आये हमारे पास' कविता में अभिव्यक्ति करते हुये लिखते हैं :

''तुम आये हमार पास
सीखने हमारी भासा
हमने भासा नहीं
भासा के साथ जीना सिखाया
तुम थे कलम के धनी
बन गये प्रसिद्ध भासा विज्ञानी।'' (पृ. 64)

अन्य कवियों में राजू ठोकल का 'पहाड़ी फुलोरा' चर्चित कविता सग्रह है। वैसे तो जितना भी लिखा जाय, आदिवासी कविता उतना कम ही है। आदिवासी कवि समय के साथ कदम ताल मिलाकर अपने समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं और साहित्य, समाज के इतिहास में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं।